











## संपादक की कलम से

### भारत सक्षम है मानवता को बल देने में

विश्व मानवीय दिवस प्रत्येक वर्ष 19 अगस्त को मनाया जाता है। मानव मूल्यों के छोंजते दौर में इस दिवस की विशेष प्रासांगिकता एवं उपेन्द्रियता है।

इस दिवस पर उन लोगों को याद किया जाता है, जिन्होंने मानवीय उद्घटयों के कारण दूसरों को सहायता के लिए अपनी जान न्योद्धावर कर दी। इस दिवस को विश्व भर में मानवीय कार्यों एवं मूल्यों को प्रोत्साहन दिए जाने के अवसर के रूप में भी देखा जाता है।

इसके मनाने का निर्णय संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्थीरिंद्रिय प्रसारक के आधार पर किया गया। इसके अनुसार किसी आपानकाल की स्थिति में संयुक्त राष्ट्र देशों द्वारा आपास में सहायता के लिए मानवीय अधिकार पर हल्का जाकर देखा जाता है।

इस दिवस को विशेष रूप से 2003 में संयुक्त राष्ट्र के बगदाद, इसके स्थिति मुख्यालय पर हुए हमले की विश्वास्त के रूप में मनाया जाना अरब किया गया था जो विश्व में मानवीय कार्यों एवं मानव-मूल्यों को प्रेरित करने वाली भावना का जश्न मनाने का भी एक अवसर है।

इसका उद्देश्य उन लोगों की पहचान करना है जो जासूसी के लिए विशेष विशेषितियों को सामना कर रहे हैं एवं मानवता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आज समूची दुनिया में मानवीय चेतना यानी मानवता के साथ खिलबाड़ करने वाली त्रास एवं विप्रवासनपूर्ण परिस्थितियां संवर्तन परिव्याप्त हैं—जिनमें आतंकवाद सबसे प्रमुख है।

आतंकवाद, अस्स्युता, सांघर्षायिकता, मरणीगई, गरीबी, धिक्षामी, विलासित, अमीरी-राशी का बढ़ता फासला, अनुसारनहीनता, परवलिप्सा, महत्वाकांक्षा, उपर्युक्त और चरित्रीहीनता आदि अनेक परिस्थितियों से मानवता पीड़ित एवं प्रभावित है। उक्त समस्याएं किसी

युग में अलग-अलग समय में प्रभावशाली हो गईं, इस युग में इनका आक्रमण समग्रता से हो रहा है। अत्रकाम जब समग्रता से होती है तो उसका समानता भी समग्रता से ही खोजा जाता है।

हिंसक स्थितियां जिस समय प्रबल हों, अदिसंसा का मूल स्वरूप बढ़ जाता है। महात्मा गांधी को कहा है कि आपको मानवता में विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है।

यदि महासागर की कुछ खुद गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है।

मानवतावाद को विकसित करने का मुख्य आधार धर्म है। इसीलिये आज विभिन्न धर्मों की मानवादी, बुद्धिमत्ती और जननवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं करता और इनका मायम्ब ऐसे भेद भावों से व्यावस्था पर जोरायर प्रहार किया जा सकता है।

धार्मिक विचारधाराएं एवं संगठन आज भी दुर्खी, पीड़ित एवं अशान्त मानवता को शान्ति प्रदान कर सकते हैं।

ऊँची-नीच, भेदभाव, जातिवाद पर प्रहार करते हुए धर्म ही लोगों के मन में एकता का विकास कर रहा है।

विश्व शान्ति एवं प्रसरण भाईचारे का वातावरण निर्मित करके कला, साहित्य और संस्कृति के विकास के मार्गों को प्रशस्त करने में इसका महत्वपूर्ण योगिम है।

किसी भी युग में हो रहे नैतिक पतन को रोककर मानवीय चेतना के ऊद्योगशाली विकास का प्रस्थाना से लोकचेतना में परिष्कार हो सकता है।

इसलिये अदी हैं पैरवन ने कहा था कि जब तक दुनिया अस्तित्व के लिए विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है।

यदि महासागर की कुछ खुद गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है।

मानवतावाद को विकसित करने का मुख्य आधार धर्म है। इसीलिये आज विभिन्न धर्मों की मानवादी, बुद्धिमत्ती और जननवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं करता और इनका मायम्ब ऐसे भेद भावों से व्यावस्था पर जोरायर प्रहार किया जा सकता है।

धार्मिक विचारधाराएं एवं संगठन आज भी दुर्खी, पीड़ित एवं अशान्त मानवता को शान्ति प्रदान कर सकते हैं।

ऊँची-नीच, भेदभाव, जातिवाद पर प्रहार करते हुए धर्म ही लोगों के मन में एकता का विकास कर रहा है।

अब इस बाण और शब्दभेदी बाण में भी अंतर आ गया। शब्दभेदी बाण आवाज पर चलता है एवं अब वाल आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

जो सामने दिखाई दे रहा है वह उस पर चलाया जाता है और उसे बिंबा देखे के बावजूद आवाज पर चलता है।

### अशोक भाटिया

कांगड़ के साथ 26 श्वेतीय दलों का नवोदित गठबंधन इडिया भाजपा से मुकाबले के लिए बन चुका है। गठबंधन बनने के कुछ माह भी नहीं बीते कि इसमें अभी से फैट पड़ती दिख रही है। कांगड़ के दिल्ली की सीधी सात सीटों पर चुनाव लड़ने वाली योग्यांक के बाद आप और कांगड़ में ठन गई है बताते हैं कि कांगड़ नेतृत्व ने बुधवार को एआईसीसी मुख्यालय में दिल्ली कांगड़ के नेताओं के साथ बैठक की। इस दिवस को विशेष रूप से 2003 में संयुक्त राष्ट्र के बगदाद, इसके स्थिति मुख्यालय पर हुए हमले की विश्वास्त के रूप में मनाया जाना अरब किया गया था। इसके अनुसार किसी आपानकाल की स्थिति में संयुक्त राष्ट्र देशों द्वारा आपास में सहायता के लिए एवं उपेन्द्रियता है।

इस दिवस पर चुनाव के लिए तैयारी करने के लिए नैतिक नेताओं से बातांत्री की बैठक में आपास में जुँग लगाया गया है। अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।

अलका नेताओं के बाद आपास में जुँग लगाया गया है।</



